जरा सामने तो आओ छलिये . . .

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

आज हम हिंदी फ़िल्म जगत के एक ऐसे गीतकार की चर्चा करेंगे, जिन्हें यक़ीनन आज की पीढ़ी कम जानती है पर निसंदेह वो हिंदी के एक महान कवि और गीतकार थे और जिनका नाम भारतीय सिनेमा में विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है, उन्होंने सिनेमा के गीतों को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, जीवन दर्शन और आध्यात्मिकता का वाहक बनाया.

वो गीतकार थे पंडित भरत व्यास जो भारतीय संस्कृति व दर्शन के बड़े जानकार थे. भरत व्यास जी ने मुख्यत: पौराणिक, धार्मिक और ऐतिहासिक फ़िल्मों के लिए गीत लिखे, उनके लिखे गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय और प्रासंगिक हैं. एक से बढ़ कर एक बढ़िया गीत उनकी कलम से निकले हैं.

पंडित भरत व्यास जी का जन्म 6 जनवरी, 1918 को बीकानेर में हुआ था. वे फिल्मों में निर्देशन के इरादे से बम्बई आये थे, मगर मशहूर गीतकार बन गए, 'रंगीला राजस्थान' नाटक के निर्देशन के दौरान उनका संपर्क प्रसिद्ध फिल्मकार ताराचंद्र बड़्जात्या से हुआ, जिन्होंने उनसे फ़िल्म चंद्रलेखा के गीत लिखवाये फ़िल्म हिट हुई और भरत व्यास जी का नाम चल पड़ा, वैसे सबसे पहले उन्होंने फ़िल्म 'दुहाई' के गीत लिखे थे, उन्होंने अपने करियर में 185 फिल्मों के लिए 1247 गीत लिखे, जिनमें से अधिकतर गीत आज भी हम लोगों के दिलों में बसे हुए हैं.

उन्होंने 'दो आँखें बारह हाथ', 'रानी रूपमती', 'नवरंग', 'परिणीता' और 'सती सावित्री', 'गूँज उठी शहनाई', 'तूफान और दिया' जैसी कई सुपरहिट फिल्मों के लिए गीत लिखे. फ़िल्म 'संत ज्ञानेश्वर', 'तुलसीदास', 'नरसिंह अवतार', 'हर हर महादेव' जैसी धार्मिक फिल्मों में उनके लिखे गीत भारतीय भक्ति परंपरा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं. वी शांताराम की संगीतमय फ़िल्म 'नवरंग' की कामयाबी में भी उनके लिखे अमर गीतों का बड़ा हाथ था.

भरत व्यास जी के प्रसिद्ध गीतों में 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम', 'सैयां झूठों का बड़ा सरताज़ निकला' (दो आंखें बारह हाथ), 'आधा है चंद्रमा रात आधी', तू छुपी है कहां मैं तपड़ता यहां' (नवरंग), 'निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है दिए और तूफ़ान की' (तूफ़ान और दिया), 'सारंगा तेरी याद में' (सारंगा), 'तुम गगन के चंद्रमा हो मैं धरा की धूल हूं' (सती सावित्री), 'ज्योत से ज्योत जलाते चलो' (संत ज्ञानेश्वर), 'हरी भरी वसुंधरा पे नीला नीला यह गगन, यह कौन चित्रकार है' (बूँद जो बन गई मोती), 'दिल का खिलौना हाय टूट गया', 'जीवन में पिया तेरा साथ रहे', 'कह दो कोई न करे यहां प्यार', 'तेरे सुर और मेरे गीत' (गूँज उठी शहनाई), 'क़ैद में है बुलबुल, सैय्याद मुस्कुराये' (बेदर्द ज़माना क्या जाने), 'जरा सामने तो आओ छलिये' (जनम जनम के फेरे) आदि शामिल हैं. ये अमर नग्मे आज भी गुनगुनाए जाते हैं इन सभी फिल्मों में उनके गीत फ़िल्म के कथानक का स्वाभाविक हिस्सा लगते हैं, न कि अलग से जोड़े गए गीत.

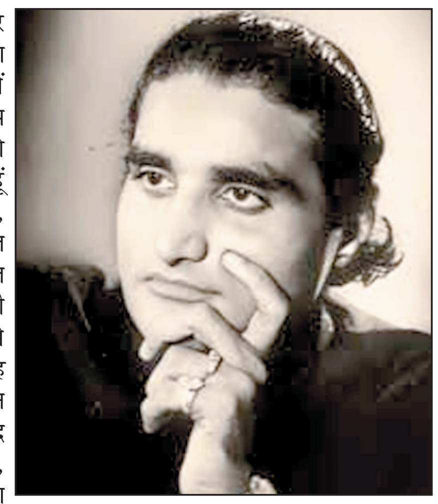

1957 में आई फ़िल्म 'जनम जनम के फेरे' के भरत व्यास जी के लिखे गाने 'जरा सामने तो आओ छलिये' के लेखन से जुड़ा एक अनोखा किस्सा है, एक दिन भरत जी से किसी बात पर नाराज़ होकर उनका बेटा श्याम सुंदर घर छोड़ कर चला गया. भरत व्यास जी ने उसे लाख ढूंढा, लेकिन वो नही मिला, उस समय भरत व्यास जी कैरियर के बहुत अच्छे दौर से गुज़र रहे थे. ऐसे में बेटे के अचानक चले जाने से वे बहुत गमगीन हो गए, उनका किसी काम में मन नहीं लगता था.

निराशा से भरे ऐसे दौर में उन्होंने पुत्र वियोग में तड़पते हुए एक गीत लिखा - 'ज़रा सामने तो छलिये, छुप-छुप छलने में क्या राज़ है, यूँ छुप न सकेगा परमात्मा, मेरी आत्मा की यह आवाज़ है' इसे 'जन्म जन्म के फेरे' फ़िल्म में इस्तेमाल किया गया. रफ़ी साहब और लता जी ने इसे बड़ी तबियत से दर्द भरे गले से गाया था. ये गीत बहुत मशहूर हुआ, लेकिन अफ़सोस कि बेटा फिर भी घर न लौटा, मगर व्यास जी ने हिम्मत नहीं हारी. फ़िल्म 'रानी रूपमती' (1959)में उन्होंने एक और दर्द भरा गीत लिखा - 'आ लौट के आजा मेरे मीत, तुझे मेरे गीत बुलाते हैं, मेरा सूना पड़ा संगीत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं'. इस बार व्यास जी की दुआ और उनकी कलम का जादू काम कर गया, यह दर्द भरा गीत सुनकर उनका रूठा बेटा घर लौट आया.

फ़िल्म संत ज्ञानेश्वर का उनका प्रसिद्ध भजन 'ज्योति से ज्योति जगाते चलो' केवल एक फ़िल्मी गीत नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना का मंत्र बन गया था . यह गीत सामाजिक उत्सवों, धार्मिक कार्यक्रमों व प्रभात फेरियों में आज भी बड़ी श्रद्धा से गाया जाता है. इसी प्रकार वी शांताराम की क्लासिक फ़िल्म 'दो आंखे बारह हाथ' के लिये उनका लिखा गीत, 'ऐ मालिक तेरे बंदे हम' पंजाब के कई स्कूलों में सालों तक सुबह की प्रार्थना सभाओं का मुख्य प्रार्थना गीत बना रहा.

पचास का दशक भरत व्यास के फ़िल्मी जीवन का सर्वश्रेष्ठ दौर था, उनको हेमंत कुमार, एस एन त्रिपाठी, वसंत देसाई, अविनाश व्यास जैसे संवेदनशील संगीतकारों का साथ मिला. शब्द और संगीत के इस सामंजस्य ने उनके गीतों को कालजयी बना दिया. पंडित जी स्वयं गाते भी थे, फ़िल्म 'मन की जीत' में उनका गाया गीत 'छुप छुप के न देखो भंवर जी, हमको नजर लग जायेगी' काफ़ी लोकप्रिय हुआ था.

वे हिंदी के कट्टर अनुयायी थे व हिंदी फिल्मों में फैले उर्दू के माहौल से खुश नहीं थे, उनके गीतों में उच्च स्तरीय हिंदी भाषा, जीवन दर्शन और मानवीय संवेदना का संतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है.

व्यास जी सिर्फ फ़िल्मी गीतकार ही नहीं थे, बल्कि एक चिंतनशील कवि भी थे, उनकी काव्य संवेदना प्राचीन भारतीय संस्कृति व परंपरा से पोषित थी. यही कारण है कि उनके गीतों में गंभीरता के साथ-साथ सरल, सहज काव्यात्मकता भी मिलती है. उनके लिखे गीतों ने साबित किया कि फिल्मों में भी में शुद्ध, गरिमामय और आध्यात्मिक काव्य शामिल किया जाना संभव है. उन्होंने फ़िल्म गीतों की परंपरा को केवल प्रेम-विरह तक सीमित न रखकर उसे भक्ति, जीवन दर्शन और भारतीय संस्कृति से जोड़ा.

आज के लिये इतना ही, अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी . तब तक महान गीतकार भरत व्यास जी के लिखे अमर गीत सुनें और आनंदित रहें .

'तस्करी : द स्मगलर वेब' में मेरा किरदार अमिताभ बच्चन जैसा : शरद केलकर

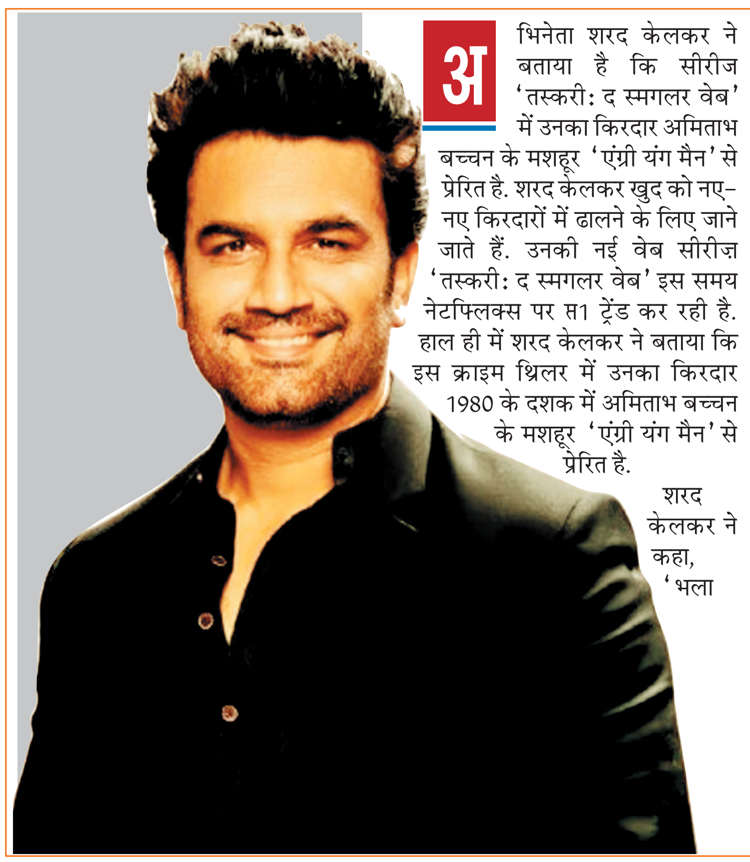

अभिनेता शरद केलकर ने बताया है कि सीरीज 'तस्करी: द स्मगलर वेब' में उनका किरदार अमिताभ बच्चन के मशहूर 'एंग्री यंग मैन' से प्रेरित है. शरद केलकर खुद को नए-नए किरदारों में ढालने के लिए जाने जाते हैं. उनकी नई वेब सीरीज़ 'तस्करी: द स्मगलर वेब' इस समय नेटफ्लिक्स पर न1 ट्रेंड कर रही है. हाल ही में शरद केलकर ने बताया कि इस क्राइम थ्रिलर में उनका किरदार 1980 के दशक में अमिताभ बच्चन के मशहूर 'एंग्री यंग मैन' से प्रेरित है.

शरद केलकर ने कहा, 'भला अमिताभ बच्चन का फैन कौन नहीं रहा है? वो एक शानदार अभिनेता हैं. बचपन में उनका मुझ पर बहुत असर था. मैं उनके जैसा हेयरस्टाइल भी बनवाता था. हालांकि इस शो में सिर्फ स्टाइल ही नहीं, कहानी और भी गहरी है.'

शरद केलकर ने अपने किरदार और एंग्री यंग मैन के कनेक्शन पर कहा, 'शो में मेरे किरदार की बैकस्टोरी उसी दौर की है, जब अमिताभ बच्चन के एंग्री यंग मैन वाले किरदार आते थे. मेरा किरदार उनका फैन है. जब वो बाल कटवाने जाता है, तो सामने अमिताभ बच्चन की फोटो लगी होती है और वो वैसा ही हेयरस्टाइल बनवाता है. वो स्टाइल कहानी का बस एक छोटा सा हिस्सा है.'

'तस्करी: द स्मगलर वेब' में शरद केलकर बड़ा चौधरी, एक स्मगलिंग किंगपिन का रोल निभा रहे हैं. उन्होंने कहा, 'इस रोल ने मुझे एक डार्क सोच को समझने का मौका दिया और मुझे खुशी है कि मैंने ये रिस्क लिया.'

इस सीरीज़ में इमरान हाशमी और शरद केलकर के बीच जबरदस्त टकराव देखने को मिलता है. कस्टम्स, अपराध और स्मगलिंग की दुनिया पर बनी यह सीरीज़ नीरज पांडे ने बनाई है और फिलहाल नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है.

विशाल की फिल्म अपने आप में एक एक्टिंग क्लास : त्रिप्ति

बॉलीवुड अभिनेत्री त्रिप्ति डिमरी कहना है कि विशाल भारद्वाज की फिल्म अपने आप में एक एक्टिंग क्लास होती है. फिल्म 'ओ' रोमियो' के साथ त्रिप्ति डिमरी अपने करियर में एक अहम और दमदार मोड़ जोड़ने जा रही हैं. इस फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में त्रिप्ति ने अपने किरदार अफ़्शा को लेकर खुलकर बात की और बताया कि यह रोल उनके लिए भावनात्मक रूप से काफी गहरा था. उन्होंने यह भी साझा किया कि शूटिंग के दौरान शाहिद कपूर और अविनाश तिवारी ने हर कदम पर उनका साथ दिया.

त्रिप्ति ने कहा,फिल्म 'ओ' रोमियो' में काम करने का अनुभव बहुत शानदार था, लेकिन थोड़ा चुनौतीपूर्ण भी. अच्छी बात यह रही कि विशाल सर हर समय मेरे साथ थे और शाहिद भी. वह सबसे सपोर्टिव को-एक्टर हैं. अविनाश तिवारी भी हमेशा मदद के लिए मौजूद रहे. इस फिल्म में मेरे जितने भी को-एक्टर्स थे, सभी बहुत सहयोगी थे. सच कहूं तो उनके बिना शायद मैं यह रोल निभा ही नहीं पाती.

त्रिप्ति ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने किरदार को बेहतर तरीके से समझने के लिए एक्टिंग वर्कशॉप्स की.उन्होंने कहा, 'मैंने अतुल मोंगे सर के साथ एक्टिंग वर्कशॉप की. वह वाकई कमाल के हैं. आप उनके वर्कशॉप में यह सोचकर जाते हैं कि एक्टिंग सीखेंगे, लेकिन वहां से आप अपने बारे में और ज़िंदगी के बारे में बहुत कुछ सीखकर लौटते हैं.

'सरू' में मोहक मटकर का दमदार कबड्डी शूट!

ज़ी टीवी के शो 'सरू' की पापुलर एक्ट्रेस मोहक मटकर ने हाल ही में शूट किए गए एक कबड्डी ट्रैक को लेकर खुलकर बात की, जिसे वो अपने करियर के सबसे ज्यादा मेहनत वाले, लेकिन यादगार अनुभवों में से एक मानती हैं. यह हाई एनर्जी कबड्डी सीक्वेंस मोहक के लिए उनकी कम्फर्ट ज़ोन से बाहर वाला था. भिवंडी में आउटडोर शूट हुआ यह सीन उनके लिए बिल्कुल नया था. खुद स्पोर्ट्स बैकग्राउंड न होने के बावजूद मोहक के लिए ये अनुभव डराने वाला भी था और बेहद मजेदार भी, क्योंकि इस दौरान उन्हें प्रोफेशनल कबड्डी खिलाड़ियों के साथ स्क्रीन शेयर करनी थी, जिससे पर्दे पर खेल की असली ताकत और रॉ एनर्जी उसी तरह नज़र आ सके. इस शूट को याद करते हुए मोहक ने कहा, 'ये कबड्डी सीक्वेंस मेरे लिए अब तक किए गए काम से बिल्कुल अलग था. इसमें कोई तय स्टेप्स नहीं थे, सब कुछ नैचुरल और इंस्टिंक्ट पर था. ये एक बार का शूट था और इसे दोबारा करने की गुंजाइश नहीं थी. इस सीन में कोई कोरियोग्राफी नहीं रखी गई थी, क्योंकि हमें इसमें सच में कबड्डी खेलनी थी.' मोहक ने आगे कहा, 'घाघरा चोली पहनी लड़कियों के साथ कबड्डी खेलना अपने आप में बहुत अलग अनुभव था. मैं तो नैचुरल डांसर हूं, तो मेरे लिए यह एक नया चैलेंज था. तीसरे टेक तक, खासकर आखिरी एंट्री के दौरान, मेरे शरीर पर काफी चोट के निशान आ गए थे. एक पल ऐसा भी आया, जब अचानक एक सिचुएशन में छह लड़कियां मेरे ऊपर गिर गईं, लेकिन वही बात सीन को इतना रियल बना गई. अब जब पीछे देखती हूं, तो पसीना, दर्द और हर पल की अनिश्चितता के बावजूद यह आउटडोर कबड्डी शूट मेरे लिए संघर्ष और मस्ती का ऐसा मेल रहा, जो जबर्दस्त भी था और बढ़िया भी. ये अचानक हुआ लेकिन बेहद असरदार रहा. ये 'सरू' में अब तक के मेरे सफर का एक बड़ा हाइलाइट है.'

मानसी जोशी रॉय ने जाहिर किए अपने जज्बात

ज़ी टीवी का नया फैमिली ड्रामा 'लक्ष्मी निवास' एक दिल छू लेने वाली कहानी लेकर आया है, जो मिडिल क्लास परिवारों की रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ी है. यहां सपने चुपचाप पनपते हैं और जिम्मेदारियां अक्सर अपनी ख्वाहिशों से पहले आ जाती हैं. इस सफर के बीचों-बीच हैं लक्ष्मी, जिसका किरदार मानसी जोशी रॉय निभा रही हैं, एक ऐसी मां जिनकी पूरी दुनिया उनके परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है और जिनके मन में हर पल अपनों के आने वाले कल की चिंता रहती है. जहां पर्दे पर लक्ष्मी के जज्बात नजर आते हैं, वहीं अपने इस किरदार को लेकर मानसी मानती हैं कि इसे निभाते हुए उनके अंदर भी वही एहसास जागे, जो उन्हें बहुत अपने से लगे. वो अंदर ही अंदर फिक्र करना, अपनों को संभाले रखना और एक मां की वो उम्मीद संजोना, जो हर वक्त साथ चलती है, लक्ष्मी के किरदार में ढलते ही सब कुछ अपने आप बाहर आने लगा. इस किरदार से अपने जज़्बाती जुड़ाव को लेकर मानसी जोशी रॉय ने कहा, 'मुझे लक्ष्मी की तरफ सबसे ज्यादा उसकी गहराई ने खींचा. उसके अंदर बहुत कुछ है और यही बात मुझे पसंद आई. मैं हमेशा ऐसे किरदारों की तरफ जाती हूं, जिनका अपना सफर हो, जिनके कई पहलू हों और जो ज़िंदगी को करीब से जानते हों. मेरे लिए उम्र कभी भी रुकावट नहीं रही और ना ही ऐसी चीज रही है जिससे मैं पीछे हटूं. मैं इस बात में यकीन नहीं रखती कि मैं खुद को छुपाऊं या लोगों की सोच के हिसाब से खुद को बदलूं. एक कलाकार के तौर पर मेरे लिए ईमानदारी ही सबसे ज्यादा असर करती है.'

ट्विंकल के गुस्से से डरते हैं अक्षय

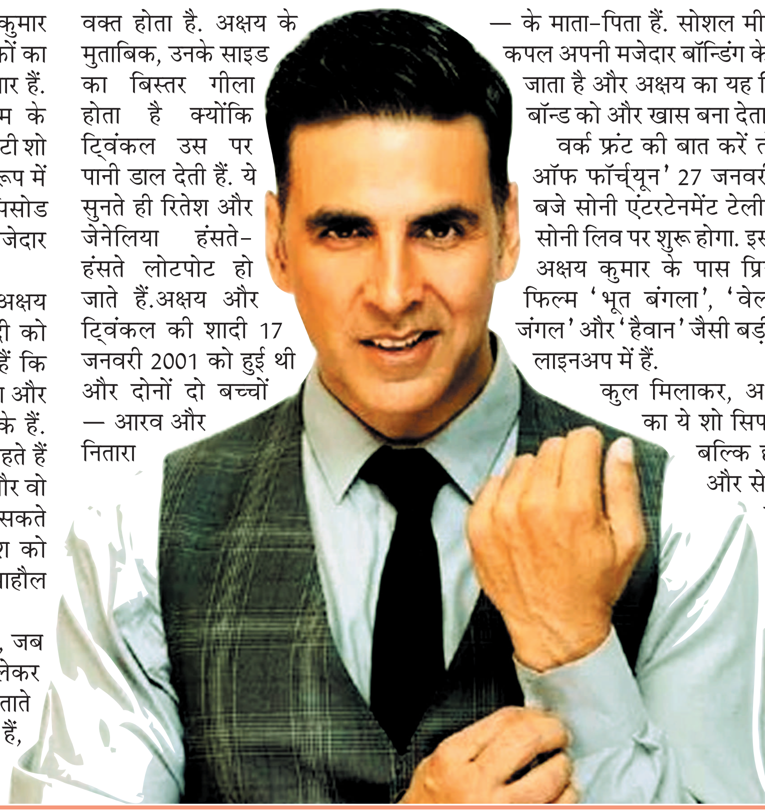

बॉलीवुड के सुपरस्टार अक्षय कुमार एक बार फिर टीवी पर दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए तैयार हैं. इस बार वो किसी फिल्म के प्रमोशन के लिए नहीं, बल्कि नए रियलिटी शो 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' के होस्ट के रूप में नजर आने वाले हैं. शो का पहला एपिसोड जितना गेम से भरपूर होगा, उतना ही मजेदार भी.

हाल ही में रिलीज हुए प्रोमो में अक्षय कुमार, रितेश देशमुख से उनकी शादी को लेकर सवाल करते हैं. रितेश बताते हैं कि उन्होंने जेनेलिया को 10 साल डेट किया और अब उनकी शादी को 14 साल हो चुके हैं. इसके जवाब में अक्षय मुस्कुराते हुए कहते हैं कि उन्हें शादी के 25 साल हो चुके हैं और वो पत्नी से माफी मांगने की फ्री सलाह दे सकते हैं. इस पर जेनेलिया मजाक में रितेश को 'सॉरी देशमुख' कह देती हैं, जिससे माहौल और हल्का हो जाता है.

लेकिन असली तड़का तब लगता है, जब अक्षय अपनी पत्नी ट्विंकल खन्ना को लेकर एक मजेदार किस्सा सुनाते हैं. अक्षय बताते हैं कि जब ट्विंकल उनसे नाराज होती हैं, तो उन्हें इसका एहसास रात को सोते वक्त होता है. अक्षय के मुताबिक, उनके साइड का बिस्तर गीला होता है क्योंकि ट्विंकल उस पर पानी डाल देती हैं. ये सुनते ही रितेश और जेनेलिया हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते हैं.अक्षय और ट्विंकल की शादी 17 जनवरी 2001 को हुई थी और दोनों दो बच्चों — आरव और नितारा — के माता-पिता हैं. सोशल मीडिया पर ये कपल अपनी मजेदार बॉन्डिंग के लिए जाना जाता है और अक्षय का यह किस्सा उसी बॉन्ड को और खास बना देता है.

वर्क फ्रंट की बात करें तो 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' 27 जनवरी से रात 9 बजे सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर शुरू होगा. इसके अलावा अक्षय कुमार के पास प्रियदर्शन की फिल्म 'भूत बंगला', 'वेलकम टू द जंगल' और 'हैवान' जैसी बड़ी फिल्में भी लाइनअप में हैं.

कुल मिलाकर, अक्षय कुमार का ये शो सिर्फ गेम नहीं, बल्कि हंसी, मस्ती और सेलेब लाइफ के मजेदार किस्सों से भरपूर होने वाला है.

सितारों ने अपनी यादगार यात्राओं के बारे में बताया

भारत में राष्ट्रीय पर्यटन दिवस (नेशनल टूरिज्म डे) के अवसर पर एण्डटीवी के लोकप्रिय कलाकारों ने यात्रा के प्रति अपने प्यार, अपने शहरों और दिल के बेहद करीब जगहों को लेकर खुलकर बातें कीं. इनमें शामिल हैं-पारस अरोड़ा ('घरवाली पेड़वाली' के जीतू), गीतांजलि मिश्रा ('हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश) और शिल्पा शिंदे ('भाबीजी घर पर हैं 2.0' की अंगूरी भाबी). कहीं खूबसूरत सड़कों पर सफर की यादें हैं, तो कहीं आध्यात्मिक शांति और प्रकृति के बीच सुकून भरे पल. तीनों कलाकारों का मानना है कि घूमना-फिरना उनके मन और आत्मा को नई ऊर्जा देता है. 'घरवाली पेड़वाली' में 'जीतू' का किरदार निभा रहे पारस अरोड़ा कहते हैं, 'बरेली मेरे लिए हमेशा घर रहेगा. इसकी सादगी, यहां के लोग और सांस्कृतिक रंग इसे खास बनाते हैं. मैं यहीं पला-बढ़ा हूं और यहां के बाजार, स्ट्रीट फूड और संगीत से जुड़ी कई यादें हैं. मुझे शुरू से घूमने-फिरने का शौक रहा है. जब भी मौका मिलता है, मैं बाइक लेकर नई जगहों की तलाश में निकल पड़ता हूं. मेरी सबसे यादगार यात्राओं में से एक बरेली से नैनीताल की रोड ट्रिप रही, जो मैंने अपने कुछ करीबी दोस्तों के साथ की थी. घुमावदार पहाड़ी रास्तों पर बाइक चलाना, ठंडी हवा का एहसास और फिर नैनी झील में बोटिंग सब कुछ बेहद सुकून भरा था. दो पहियों पर सफर करने की आज़ादी ही कुछ और होती है, यह मुझे प्रकृति और खुद से जोड़ देती है.'

सरप्राइज गेम में अनुष्का आगे

दुबई में विराट को मिला देसी सरप्राइज

इंडियन क्रिकेट के सुपरस्टार विराट कोहली और बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा एक बार फिर सुर्खियों में हैं, और इस बार वजह है उनका लेटेस्ट दुबई टूरिज्म ऐड. इस वीडियो में वो सब कुछ है, जो फैंस देखना चाहते हैं - रोमांस, मस्ती, नोक-झोंक और ढेर सारा प्यार.

वीडियो की शुरुआत होती है दुबई के शानदार नजारों से, जहां विराट अनुष्का को चैलेंज देते हैं कि वो उन्हें सरप्राइज दें. इसके जवाब में अनुष्का रेगिस्तान के बीचों-बीच विराट के लिए एक प्राइवेट लंच डेट प्लान करती हैं. इसके बाद दोनों वाइल्डलाइफ सफारी पर निकलते हैं और फिर बीच पर वॉलीबॉल खेलते नजर आते हैं. यहीं अनुष्का विराट को हराकर हंसते हुए कहती हैं - 'मैंने कहा था ना, मैं बेहतर एथलीट हूं.' विराट भी मजाक में जवाब देते हैं - 'और मैं बेहतर डांसर हूं.' लेकिन असली ट्विस्ट तब आता है, जब अनुष्का दुबई में ही विराट को उनके फेवरेट दिल्ली वाले छोले-भटूरे खिलाती हैं. डाइट पर चल रहे विराट खुद को रोक नहीं पाते और कहते हैं - 'प्रॉपर दिल्ली वाला टेस्ट है.' ये पल फैंस को खासा पसंद आ रहा है.

वहीं जब अनुष्का खुद को 'सरप्राइज चैंपियन' मान बैठती हैं, तभी विराट उनकी फेवरेट कोल्ड कॉफी लाकर पूरा खेल पलट देते हैं. अनुष्का का हैरान चेहरा और विराट की मुस्कान - दोनों ही इस वीडियो की जान हैं.

सोशल मीडिया पर फैंस जमकर रिएक्ट कर रहे हैं. कोई इसे फिल्म बता रहा है, तो कोई उनके डेटिंग दिनों की यादें ताजा कर रहा है. कई फैंस की डिमांड है कि विराट और अनुष्का को अब एक मूवी में जरूर साथ आना चाहिए.

कियारा को बताया गया रूढ़

एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री की चहेती एक्ट्रेस कियारा आडवाणी इन दिनों अपने किसी फिल्म प्रोजेक्ट की वजह से नहीं, बल्कि एक वायरल वीडियो को लेकर सुर्खियों में हैं. एक सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर ने दावा किया है कि जयपुर से मुंबई की फ्लाइट में कियारा आडवाणी का व्यवहार काफी रूखा और असहज करने वाला था.

इन्फ्लुएंसर कार्तिकेय ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर करते हुए बताया कि वह अपनी मां के साथ बिजनेस क्लास में सफर कर रहे थे. उसी फ्लाइट में कियारा आडवाणी और एक्टर कार्तिक आर्यन भी मौजूद थे, जो अपनी फिल्म के प्रमोशन से लौट रहे थे. कार्तिकेय के मुताबिक, उनकी मां को सीट नंबर को लेकर कंफ्यूजन हो गया और वह गलती से कियारा आडवाणी की सीट पर बैठ गईं.

हालांकि, एयरहोस्टेस के बताने पर उनकी मां तुरंत उठ गईं और किसी तरह की बहस या हंगामा नहीं हुआ. लेकिन इंफ्लुएंसर का आरोप है कि उस दौरान कियारा आडवाणी ने जो एक्सप्रेशन दिया, वह काफी नाराजगी भरा था. कार्तिकेय ने वीडियो में कहा कि कियारा का चेहरा देखकर उन्हें लगा जैसे एक 'नॉन-सेलिब्रिटी' का उनकी सीट पर बैठना उन्हें नागवार गुजरा हो.